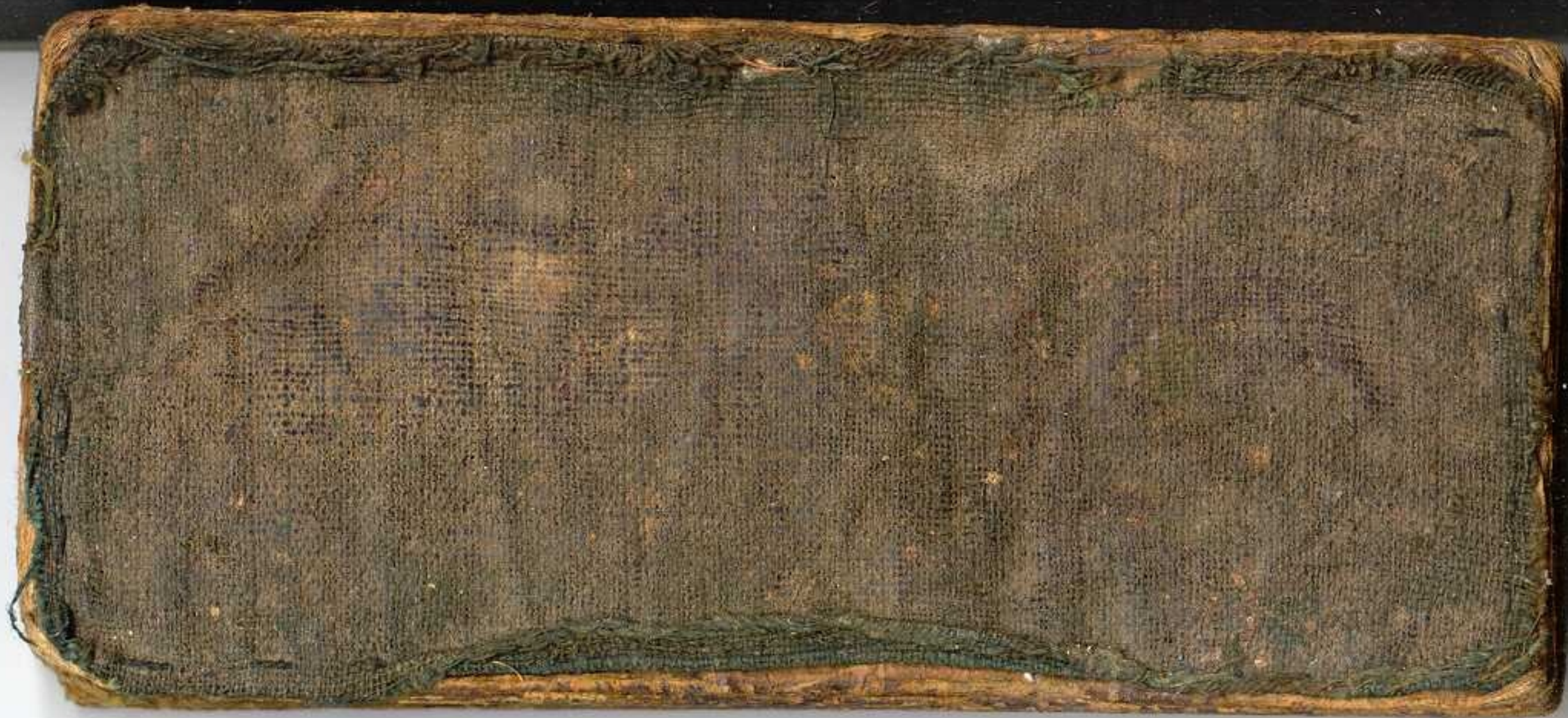




॥ विष्णुसप्तशती ॥ २३

नरु मे भिवर्षु प्रजा कलंक मलं ॥ का ला ॥ मद जानंद का लिः
का ॥ आ व ॥ निखिलं कि न ह द या ॥ ह्ला द सं द वं ॥ को ला ॥ न रु न
म श्श क मा ला ॥ वा क जा ड ॥ ॥ ॥ ॥ वा ग ॥ अं व रु व वि
वि न्ध मे नो न ह वि ध विं वा ॥ अं का व वि या पि न सु म ह वा ॥ क
॥ न मा मि ड वा गी भ व स य न म नि ह द या ॥ वि वा म शि क टा
ग भ व स ना ह व कि न ह द या ॥ ॥ पी ता नि वा प्र ह सी न व य

॥ मधुसूदन ॥

न ॥ प श्च कि न म कू ट म ति प्र य ना ॥ ॥ ध र्म न क म डा क
॥ हि म प्रा मि ॥ घ ण वा पा शि पु रु रु व रु पा शि ॥ ॥ सु प्रा स न
न मि न रु व व न र ह ॥ रु ना शि य न मा दि व रु कि न गु ण ल य न
॥ ॥ ॥ ॥ वा ग रु न वि ॥ म ध्व म न म हा मा नि क न क प्रा
कि न यु र्व वि द ह ॥ अं व दि यी ॥ अ प न ग भ ठा य न ड रु व रु व रु व न
य श्श कि न वा पि या न ॥ ॥ न म य श्श वृ द्ध वि न्ध सु कि न वि

॥ नमः ॥

न्यहन् विन्व रुक्मपक्ष्मन्त्रि ॥ अन्नादिद्यानत्राङ्गानिहेन
 मानसादयंरुक्मयंमित्रघ्ननद्यानत्रयं ॥ ॥ ज्ञानवदान
 सः साडयद्दीपनाडयद्दीपयन्निजाकुक्षनः स्वसनलाडयद्दीपयन्नावे
 नाडयन्नास्वगुणत्रयं ॥ ॥ दिवधवत्रयास्त्रियनत्रयधिय
 चियसयकम्पसादत्रयंविद्यानः ॥ अन्नाद्याडदिचियसायकय
 कासादीकृत्तानिधिनित्वित्रयवदयंति ॥ ॥ गुणत्रयदीहि

[illegible]

शास्त्रा मंद

राघवस्य वदुष्यस्य संवत्सराय २ दवा सवनय

प्रमृदिनरुदया॥

॥ ॐ श्री ४ हं कीर्त्तयेत् स्वधनका नन ॥ ३ ॥

नृद्यन्धानेविप्रसाश्रनंद॥

॥८८०००॥ प्राग्वह्य विधि ॥

निर्माणा विचक्रुषां चिदल सत्रोपहसधवा नकां देवता दय
वि२ समीप यजिन ताश्च मांसमिन्नानीय सुनायक जीवन व
धी ॥ ५ ॥ हुँ नमामि दवीश्री बडा विद्या भिन् निरुवर रुयरु

नष्टवसमस्तद्वीर्यादिशान्पुर्णयोगिकामनूयमाह
कमुविमुक्तमस्तुलननूययानि॥ ॥ वसदप्रमप्रद

प्रधम्मेत्रकु, वातुभेदलसंज्ञावाचक २ क्षात्रिभेदलकमलम
 हासुखचक्र, कंकायचक्रपञ्चाङ्गचक्रनाथ ॥ ॥ दहागोडे

नो विद्यात्रिभिर्न शान्ते दानि मे वसुधैव कुटुम्बकम् प्रया नाद नृषी २ यी
०॥ दिदमस्तु मिसु गान्त यूक्तानि किन ह्यनदायनी वी भवेत्तु ॥

२४८ आदिनि ७

[illegible]

भक्त्यामीनीदवी नीत्रवदना ॥ वायव्यामाहिनीदवीः
 भागवत्सूक्त २ पांश्विभसंतात्रेणादवीः ॥ ॥
 नैमिष्यसंगामनीदवी हरिकवत्सूक्त २ दहनवत्सूक्त २
 सवत्सूक्त ॥ ॥ नरुत्सूक्त २ काननायकसूक्त २
 स्वस्वीरुसंरुत्सूक्त २ नवप्रसादेरावत्सूक्त ॥ ॥
 रत्नवि ॥ ३ ॥ श्री ४ ॥ रुद्र ॥ श्री नरुत्सूक्त २ पूजापू

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः

डिकयूय अरावसखस्त्रपरावन॥ कु वारखरवादि
 वलिपुडन, यद्यथादयशवघ्नन? यश्च। मृयनस, यंच
 सात्र, पश्चिहानसर्वलीना॥ सर्वयद्वारास, रं
 नयन, यिभवासादापसात्र॥ जयकताकिनीदुशि, मृष
 ममात, दंवालेगृह्णन्त॥ दानपतिस्व
 कार्यत्वया, सर्वसिद्धिर्संपत्तिर्भाति॥ आसंसात्रकथाग
 २

नवचन, सर्वसुखसंपत्तिर्वृद्धिर्न॥ समयत्रकंठ
 दानपतिर्न, सर्वसिद्धिर्सुखभाति॥ यथेवकथेवकुं
 थपितथमाकुकमथन॥ ॥ ॐ ॥ यथापथमं
 कलि॥ अति लक्षणलकल, आकुव, मास, मन्मसलुल
 चक्रयाशा? वक्रयकलसत्रकाल, संपातिहात्र, मन्मसलुल
 चक्रयाशा॥ कु ॥ उमन्मन्मन्मिमा, मुन्मन्मन्मन्मिमा, आति

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

न॥ . ॥ सतगुरुचरणाभिषंगप्रिया ७ रुनायेवाक
वक्तुं वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कायप्रपन्न ७ स्वद्विषसत्त्व उग्रधनुः ॥ ७ ॥ नताहं नना
हं ननाहं ननाहं ननाहं ॥ ॥ दयाश्रुतिंगराकाशधनुः ७ वक्तुं
यत् ७ मुद्राधनुः ॥ ॥ धवयस्य सखनदहधनुः ७ सय
उससाहियत्र उग्रधनुः ॥ ॥ मायादहनीनकं ७ सो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

हियकनरासत्त्वमहं ॥ ॥ ॐ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नामि ॥ निचेकयविभमि मलुलमाभयि विभानसुप्रनिधया
७ वक्तुं वासाहेश्रुतिङ्गनसम्पदा नानाप्रसिमहोक्तो ॥
७ ॥ नताहं ननाहं ननाहं ननाहं ननाहं ननाहं ॥ ॥ नौप्रव
ल्लचकुवक्तुप्रनिमुखविभनं यत्रमातंदसुप्रनिधया ७ विभयव
उग्रधनुः ७ उग्रधनुः ७ उग्रधनुः ७ उग्रधनुः ७ उग्रधनुः ७ उग्रधनुः ७

२६३।३३११४

[illegible]

प्रहसादुक्तवाचनं मंदियामृगान्तमकूटकमादिवाव्या
॥ यत्र प्रसाधस्त्वज्जाया समप्रसंदविभायका वा द्रुहम
विनाहिते वक्रवाचा हि रुदा महिया सायुसाया ॥ भावि
लक्ष्यन न्नयंसहसय न कर्ण्यवर वायिता वेत्ता गायतनी लाव
भूति धिप्रकाश भन्म लून कुसवीता ॥ अडि चंद्र दुषट
हुं ह्रादि ग्वन सप्त प्रपाये सायि मुन्यरु का वा द्रुहमा विप्राहिनी व

卷之五

ऊवावाहि कुक्कुविनूदषमिर्जुंक्षवा ॥ गगवंतिलिलावज
 आजेयाउत्र.सकगुनूवनगभ्रवाध ॥ २ ॥ समयानंदरुतिंरात्र
 मलुल सुचनवकुवावाहि ॥ ॥ ००००० ॥ वाग.रु.दि ॥
 मिहंरावायि.आगिनीदइकवांन ॥ १ ॥ कमलकलिम.य.रु.क.न
 हूंनकोवायि ॥ ५ ॥ ॥ आगिनीकुक्कुविनूवनहूंनजीवायि ॥ १ ॥
 आगामहूंनवायि.क.मलसंयिवायि ॥ ॥ ॥ अयहूंनआगिनी

विदिदिदिदि

[illegible]

阿彌陀佛

[illegible]

मन्त्रायामैश्वर्यसिद्धयै ॥ ७ ॥

संनं विष्णु वन सन्वत्कीर्त्तन॥

॥ गवकुदहनविम्बुः

मानसहस्रकवृत्तसंज्ञक

द्वादशरुद्रधर्मिणा, व्यात्रिचउवदत्त २ श्रीलसंज्ञा, गगनसंज्ञा
 रुद्रोना ॥ ॥ ००००० ॥ यागविलास ॥ उदिता ॥ २५

या यवत इना २ वरं सहदासक कासहसता ॥ अ ॥ १५

[illegible]

॥ दिनक वसंतुल, सुध्या गता? कनू रम मुन वस, सव

॥ दग्ध आलिंगन युनि निहंता ॥ २ ॥ दग्धाः सुतः

नमः मित्रममिनाम् ॥ ॥ गमवन्निपवर्न पुनिमवर्न ॥

वक्रतायादिभुंरुभिन्ननृमिका॥

मकनि॥ रुं रुंदरुधव संसाप्रनवू० ह्रंदाशालिंगासयाग

॥ ग. स. श्र. स. ३ ॥

श्रुतानि निहि कऊ नू नील समदहा? कक वडि। नयनी, हाषमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अवनिनाडा नमः०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीवसिष्ठे नमः ॥ श्रीवसिष्ठे नमः ॥ श्रीवसिष्ठे नमः ॥

॥ साधने सायायुनंदन बुद्धि नुदियि सायाया दठ रु नः

२३३

न २ समसमायात्राविमाहास्यनश्यासमाहिमदहाव
॥ वेत्ता ह्यस्य युक्तानि तन्मौत्रिकयूननोपनयनसूत्रकात्रा २
सूत्रनयनागमचंद्रितवत्रेण यायसूत्रधनश्रुचनवीना ॥
॥ ०० ॥ जागृत्युक्तिवृत्तलकर्मिलीचकभारतलहविः
न गीयमदुननसिदमाता २ मित्रवादिचकीत्रेयाहस्यविरुमि
मगायासकभादिबंधुनिनाया ॥ ६ ॥ युरुसयाहननसः

मानकायायाहलनाथयासम्वययाया ॥ ॥ वरुकात्राक
हाथयविद्याकंथाक्रियाडवडांवा २ संयुटयागिनीकमलाविः
हासिंलग्नमहासखभावेयसाद ॥ ॥ वरुवात्रादिआलिना
नसम्वयनावायिवरुविविदवरुंवा २ वाहुत्रिकोत्रिनेयाकिदीन
हननमईहवसुवरायुमाद ॥ ॥ सहस्रसंवृक्तित्रेयाग
वकिंकर्षयालगादयुक्तचनरायुमाद २ प्रहृष्टालिकनरुदकि

२७३। लोका २७

हनुना विना मयि भूत्य क नृणां ॥ ॥ ६०३ ॥ वाग का मा
युक्त लिङ्गं का नो हव मन्त्रि ॥ दुनील समद निदहा २ वि
मय कृति न भूति क न मं कृता म कृता दधि रं ॥ ५२ ॥ वा
मि गाय वदु वीरं रु व सिं धूत व र्क्ष २ वि म्ब ना था ने रु व न व्या पि
ना व द्या वि धं स न क व र्क्ष ॥ ॥ अ नं न ज्ञा न स्ति न वि रु व न
वीरं स वा रु व रं क आ वि २ वा म क र्क्ष नी ह दि या म म य रु वा वि

२७४। लोका २८

गा सा वं ध न क व र्क्ष ॥ ॥ ना न न ता हा व नो य नं का र्क्ष म त व
ह वि न द हा २ ड र्क्ष क ता ली य म व द नो नि रु व न या य पु व द व
व ॥ ॥ वि वा धि या ने स र्व रु य द व र्क्ष यु क पि म आ दि सा क
म न ता २ स व न न य हा व दि व या दं स र्व सि धि मा रु रु त द ॥
॥ ६०४ ॥ वाग का मा ॥ ह वि रु स रु व रं स म द हा न व
प्र स हा ति म ल क स ध या २ हा द म रु जा व द व द नो हा द म व रु

लनकननं ॥ ५२ ॥ नमामिष्टातिचक्रम्वनंसायरुयुरुवरु
 यरुनसं ॥ ५३ ॥ चक्रुर्विभानिपी० म्वनंरुकिमंविदवीभन
 नं ॥ ५४ ॥ चक्रुवचक्रयाविद्वनादवीसंयुक्तपुक्तलितसिक्त ॥
 एहसंयुक्तगालिकांलिपदाकांनान्मिक्तसंदना ॥ ५५ ॥ दामदवीप
 कलावा नमामिष्टावक्रम्वनंसाय ॥ ५६ ॥ मन्त्रुवचनसं
 भावराधय्यरुनयिगीनायाकुलिम ॥ ५७ ॥ दानयानिप्रमनाहर्मस

५८ ॥ यमलुलग्रायाधिता ॥ ५९ ॥ नासाह्यावि ॥ ६० ॥ कयंकयं
 ६१ ॥ वाद्युप्रसवयसहाकवि ॥ ६२ ॥ म्बययदुष्टसंहावला ॥ ६३ ॥ ५४ ॥ नूदी
 ६४ ॥ मूनंमनहाहंकाप्रतावधिमातानिप्रवावृदि ॥ ६५ ॥ किमयय
 ६६ ॥ यामप्रदरपुनन ॥ ६७ ॥ किनऊनानिदवीवक्रयागिती ॥ ६८ ॥ कयं
 ६९ ॥ कयंराजारप्रतासस्यरा ॥ ७० ॥ गीवावृडनवगिरमाला ॥ ७१ ॥ कयं
 ७२ ॥ कयंनावरुऊरानसंसाय ॥ ७३ ॥ पुतामामिअद्ययसंवाह्यावि ॥

२ अनामिका २०

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अनामिका सुसुप्तमिदं दृष्ट्वा स्वप्ना ॥ विविचि
यत्तु मां मे मकटं हृदि ना ॥ ॐ ॥ नावयिष्यामि च वीर्या ॥
न नाञ्जुता नंद विना सायि मय वीर्या ॥ ॥ वाम उरु व
विं वृमूदा दर्शना ॥ पुष्पा आलिङ्गना मृदय महा वस ॥ ॥ सा वः
चरु नंद र्या निविल विघ्न हन्ता ॥ न स्याति विघ्न कर्तुं निपात्ता ॥
॥ विना गाय च युक्ति रु वरु यंकता ॥ वा विना मे इग नत गाय
हता ॥

२ वज्रपातना २०

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वज्रपातना ॥ विविचि
॥ विरुवन नाथ दाहि मया ॥ ॐ ॥ विना मया महा वस महा
सुख रुत्रिया ॥ वरु दवी पुसा द मरु रु वरु न ॥ ॥ उरु ना
वि विदल क मल संकाय ॥ दाहि विना मया वन नदि ॥
॥ वज्रपातना ॥ महा सुख रुत्रिया ॥ यथा निव मवी रु वा वृत्ता ॥
॥ सत रु वृत्ता द वरु र्था हि वरु ॥ या ला न्वनी संसा वस

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ३०

गोसायन्याया ॥ ॥ पूर्वदिगास्ति नरुवनीलवर्ण २ दक्ष
हेनयाकुधात्रिवाभविंदुधवा ॥ ॥ यस्मात्रित्रीश्यामिनी
दवी २ भावकिनिलावर्ण कंकाजसंवजाय ॥ ॥ ७२ ७३ ७४
वागतिवद ॥ अथयनिवर्ज न अथयमनूपम गगलकमलक
साधना २ पुन्यताविद्याभित नायप्राविद्यादवी प्रासाविंदुस
मजालिता ॥ ॥ ॥ नमामिनिवायवनिवद नमराव हनुस

प्रसप्रापिका २ सत्रकचतुसमनकप्रकाभितकलकचतुसमवा
पिका ॥ ॥ वडंगजागंवर साभिजचकवार्ह सत्रमपुलरुव
विना २ निर्मलहयाचक्रध्यापित अहिनिमिक्तचत्रकं नमयसाध
ना ॥ ॥ जानंदपत्रमानंद विजमासहक संरुवा २ पत्रमावित्र
मानकृदिप्रमहासुख सुगतसंपदप्रापिका ॥ ॥ ॥ हवककालच
कृपाचक्रसमप्रमनककाटिसिंहायात्रेगता २ ग्राहनडादियानय
लुगिदिजात्रंघनपुहमहासुखजानकं ॥ ॥ ॥ ७५ ७६ ७७



२२ स क २ क ३३

वननाथ उक् सच्चननाथा ॥ १०३० ॥ वनानाथ ॥
सकनकगानगुन सच्चननाथा ॥
अथा ॥ उरुवननाथ उक् सच्चननाथा ॥
॥ सच्चनसच्चनकनसायनाथं ॥ विविधिविकल्पविधुमानि
दवी ॥ ॥ दविवाग्राहि कुक्कमसि नदहा ॥ रुवरुयह
वहा विभावातेलाघ ॥ ॥ सकलाविघ्नहानिमानेयानि

११२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

वृग्म ॥ वानेयानिहर्गनिवासनवृष्टा ॥ ॥ लवणवहन
हानिमानेदि ॥ ॥ अनपमसुखनस मप्रसुखादि ॥
१०३० ॥ वाना मान ॥ ॥ निरुं गुल अत्रधूलनाथा ॥ आहतागमान
आमिनीययिस ॥ ॥ ॥ आनंदादिदेवाह निआनंदादिदेवा
॥ पात्रिनात्राधिहवन मनसासंपूर्ण ॥ ॥ दुष्कर्मनिर्दि
हन् निरुं हल हवन ॥ भावविमनहायेवमिसंतात ॥

सर्ववैद्य
३३

श्रीगण्डाध्यायिणा नहिं कसलायानयायी ॥ १-००००००
याता नया नया ॥ सर्ववैद्यविषयसहितविषयमाला सुदाने २ व
ज्यागोनी वरुमाले त का प्रथमला डिमिला चना ॥ ३ ॥ न
मासिवाक्ये सिद्धि यागि ला माले ता २ अथ उपदिष्टि सिद्धि मागि
नेगस माले ता ॥ ४ आदि मंतम लुल त क ह म प्रदी यस्त
विंयना २ वाडि क लुल क लुल ना च क म ल ला विरु विना ॥

श्रीनवग्रहनाम ३०

कर्हि मयन मान सुदाने मकट कसादिगं वया २ मलु माला रव प्री वा
माले त ल ला डि काल ह यं क ना ॥ १ ॥ तुल्य द वि प्र क म प्र का
स यन विन्धा वि या पि ता २ तुल्य वन ला मित्रं ध त्रिया मने धूल क ल
पा म वा ये या ॥ १-००००० ॥ नाल व म न ॥ डि न वे प्र क त नी
पुहा व व न मा ति २ विना सार्थि म म प्र म ह वा आ ति न म ॥ ३
ति नं स ह स य न मं म न स पू र्ण २ मं धा आ ति ता स आ नंद न यः

७५
३५
३५

न ॥ वायसि संहाग मय प्रथी मय न ॥ वायवि वाग दयि स
मा ने स न्ना ॥ ॥ अ क कू लि म संहाग वि मय न ॥ सु व न ॥ ॥
मय, चंदा गालि स ॥ ॥ द हा दि ह सु व न ॥ अ क म व न ॥
पु न मा मि सु न न्दी गालि स ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ वा ग म य म ॥
॥ पु म दि न दि द म ह मि सु द न ॥ स न ॥ अ व म लु ल सं कि न ॥ ल म न ॥ ॥
द म ह क व ड व द न ॥ स ह र ॥ व क वा वा हि क ह ॥ अ लि ग ॥

॥ हं हं हं द ह दि ह ह न ल म ल स य व स य धि या य ॥ दं द
आ लि ह स अ य स ल व न वा धि य न अ सं व न वा या ॥
कू लि म य ह ग क न म ॥ कि म न क ह ॥ उ म व स ह र ॥ स कू यू रि
क क या ल व ह ॥ ग पा ल य न ल व म ॥ म रं ध रा ॥ ॥ पं व कि न
व ल स कू ट आ ल क न ॥ व ड म द्रा जार न ग म ॥ हं ता ॥ अ लि का लि
इ यि आ लि गं हं सा पा ये वा पु व म नि वा स कू ह न न ॥ ॥ न न

नीर

पञ्चमः पृष्ठः

सिद्धिमा लला लवला संवत् दिव्यचक्र उमि कन्याशहिया २ कन्या
कन्यामापुंरु पायमयस्य गमवां विषयमा दिव्यगोता ॥
॥ १०० ॥ ॥ यामा कौमिक वसेरु ॥ मधुविषयतेयना दयानि कला
या २ सकलदव वंदिरुयादं ॥ ५ ॥ सीडीआदि वृद्धा संरु
कुमाला २ लवला विदिन यमनृष्टयनं ॥ ॥ कंकमयस्त्रि
सुनचित्रविषमा २ लला गंरि न कन्या विहारा ॥ ॥ विहारा

पञ्चमः पृष्ठः

याचित मकट यानंगसनस २ विष्णुविद्याधि क प्रियंगुमस्य
॥ ॥ १०० ॥ ॥ यामा कौमिक वसेरु ॥ मधुविषयतेयना दयानि कला
या २ सकलदव वंदिरुयादं ॥ ५ ॥ सीडीआदि वृद्धा संरु
कुमाला २ लवला विदिन यमनृष्टयनं ॥ ॥ कंकमयस्त्रि
सुनचित्रविषमा २ लला गंरि न कन्या विहारा ॥ ॥ विहारा

२५५

तयकनं कृत्वा वा निहामा २ युष्टिक वं कृत्वा समाकृत वयं न
॥ नोद महावनि यो ह वन गायन २ मयमा मय मय नूध
न आ हा न ॥ ॥ ८६०३० ॥ नो म य सा न ॥ मा या हा ल वि व
स द न स ग्री वा १ मा ह मा नं द द र्थ शु दि मा या मा हा ॥ ५ ॥
उ स मा य म सा न १ नो म द व मा ह शु दि न आ सा ॥ ॥
म न मि ख न स न द ट क नू च य १ ८ म स वी चि क द स स य ८

२५६

५१ ॥ सह ज सं रा व न य उ द ना ग न य वि या १ न सा य न
म स वा म य नू च ॥ ॥ मू ल धू ल उ द य च नू या य व सा दा १
न वी नो नो नू च य य र य च क मा वि वा ॥ ॥ १०० ॥ नो
नो म क वि ॥ डि न व य न न याने ह व न गी कां य र क नि वी मि नि
नो म नि ता १ नो प ल म उ त मा य नो नि ह न कि व ली रु ग न ना थ
मू र य ना ना ॥ ५ ॥ डि नो म नि वी चि या न मू ल य य य य य

पुनस्तामि वृगमललाकं च दत्तं २ सिद्धायागिर्वंधूदरूप
 त्रिकमलाया. रुवयानि वृगमसिनत्र दत्तं ॥ योनि
 कमलविकाभिन्नो धियात्र वामकमलहाथ २ दुष्कसुमयं न
 प्रागकृष्टयात्रिदु. दुःखरुच्यद्वयं ॥ १
 कायारुणवन. तमाभि. आवृगमललाकं च दत्तं २ तमाभि
 तमाभि. आनत्र दत्तं स्वर्गमेधया नालद्वयं ॥ १ दत्तं

२५
 सिद्धाणिमनलकृष्टयात्रिदु. दुःखरुच्यद्वयं २ आश्रमि
 तारुवाभिप्रगनधिया. आलाभ्यत्रमत्रभागादि ॥ १
 ३ ॥ नाम. रुचि ॥ गजकिन उच्च हाथधिया. कमलकृष्टि
 मूर्धवात्रि २ उमत्रकत्रादि कृष्णत्रादि मूर्ध. वामदक्षकृष्टयात्रि
 धिया ॥ १ ॥ आसत्रत्राया. वाश्रिनुक कृष्टिना २ मात्राधि
 त्रवायधियात्रादिमाया. सासूरुवंतु मूडात्रीना ॥ १ या मः

बुद्धमूढवाममहाथाधारेया उदयगिजमाना **२** वीलहाविः
 न लाकिनकनकाहवचउमखभूमिविकलात्रभूद्वया **॥**
॥ आविट पुआहेत्रववाययियात्र. कालिशानिर्विरुम
 दा **२** विन्धकुलिमभूद्वचदुहायूकवायुवर्ममघनमूडा **॥**
॥ रुडिसंविनवीप्रभत्र. नायकनिमित्तकमहावीत्र
 वीया **२** कवृषष्टमत्रविनवीप्रभत्र. उडयिसयत्रसंसाधया

(कांशात्र ५०)

॥ ६३० ॥ नारायणठगि **॥** रुंविनिसनवनवेप्रसायिक
 थिस **२** उ० रुवाज. मलुतवाया **॥** **५२** **॥** पुडंकायदमत्र **५३**
 गकानेवाभियोथ **॥** **॥** अमिय अमिय निवंकनद **५४** **२** **॥**
 रुडसंदविशया **॥** रुनरुनकथिस **॥** **॥** पुवडयामानि
 प्रममत्रमात्रिया **२** वरुवाजाहिश्रुतिमानकाल **॥** **५०**
 रुवाजकनृषकवा **॥** रुयंरुयंमनिहनतीतावकवात्र

३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

वामनाश्रयगङ्गासूत्रादिनयानि कांदतयदमा. नृणां विषयः
निर्वाहसम्बन्धः २ मसि मुक्तावलाहकम्. नृणां विषयः संप्रका
शः ३ ॥ मात्रिया विद्यमात्रियादयः. मात्रियादृष्टवि
नाभनं २ मात्रिया माला. मालसंग्रहः. सनृतययदृष्टवनीय
ता ॥ ॥ यत्र गृहानां कूडावकुर्वन्. हिंदियाप्रदहिने
कया २ मसजधनखड्गो. यद्यत्र कर्हिवाभः ॥ विवि

६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

ववल्. कं वृकालिदसा. कटाङ्गमसिमात्रिता २ लंबादनय
न. लंबादनयवला. यद्यत्र सिनिमिनिवाङ्गनं ॥ २ लंबा
नय. न वलाकालिता. मसिकमखमनि संदनां २ दिनादवाक
मसखदाना. नमस्तु नमास्तुमाधियानि ॥ ॥ ४०३
नामसादि ॥ यद्यकपाल. आत्रेयमोत्रे. यद्यस्तनयकमृदक
वला २ ननामेत्रमाला. गोवाभाला. वाचुवर्मा कर्हि. विनवद

हय नाग

[illegible]

[illegible]

दिरुजुगुमसुवतिमिलानना. लाहिनवर्षपुकारिता २५
 हवतव्याधिनि. दाहिनकर्त्ति. भापि. मरुधुत्रिककयालका. २६
 ॥ वाकि. कुलु. कर्त्ति. भापि. हाथ्याचका. विरुषिनी २७
 ॥ सभोयुत्र. का. वि. यमसला. तमसाला. विरुषिता. २८
 ॥ मरुननीयमगु. क. भ. श्री. हवरयना. वि. वि. श्री. २९
 ॥ हमानेदल. श्री. वि. श्री. द. श्री. म. वि. मि. वि. व. ल. पु. रा. य. श्री. ३०

२५
२६
२७
२८
२९
३०

वना ॥ ५ ॥ तमादवीवृद्धाकिनी विष्णुजननी ॥ निरु
वनव्यापिन किमहं न दायनी ॥ ॥ इति न कन विना
मिरुदधकि ॥ २ ॥ कामकभोटक न तुर्मात्रमयिविधि ॥
नयसिमलुलमा ॥ ३ ॥ उदेयानगमन ॥ ४ ॥ नलोपुनवप्रदानं
पुवमिक्त ॥ ५ ॥ प्राविद्यावनिदवी सनननमहिता ॥ ६ ॥
कलत्रादि सिद्धिदाहिभमाता ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥

२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०

अष्टकगुणालादेगांविदिगंरुवन धीमिप्रमालय नुनंरा ॥ १ ॥
गलभमवगगलभमनंमनंकावा गलभउमप्रयल वाडि स
॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥

ध्यादिनीडंयकडनाकिनीखद्वांगयप्रभूश्रृंक्रमहस्ता २ वरुजाके
 नीधायवनाप्रजाकिनीचलुलजाकिनीचरुनदवी॥
 कितऊननीदवीजाकिनीकुंरुपायप्रसवसयशमूडाहवसः
 विरुषिना २ खकुरुनेकवजयशखद्वांगपादुपयप्रभूश्रृंक्रमहस्ता
 हनदवी॥ ॥ ६७३ ॥ वागलालिक ॥ विरुषाविरुषावि
 वयवतसंजाग्यरुलसिचडाविनारिकमल २ दहायिऊन

विंदुमानेसत्रायिसूत्रंगकिनकिमिश्रासमयम्याससययं॥
 ॥ नममंरुधावकासवक्ररुवजसंतवविभूत्रय २ यः
 यिपदुससंथाग्यसंरुवनिम्यनासहजागतंदमयहनययं
 ॥ वजययिहभनकुंक्रमनूतंतनूनाससंगीकिप्रज्ञाख
 धाने २ रुगरुदुखनाभनंवाविहलदायकंथागधर्मसावह
 दयं॥ ॥ वजययिहभनकुंक्रमनूतंतनूनाससंगीकिप्रज्ञाख

